बात है 6 अगस्त 1945 की। रोज़ की तरह उस दिन भी जापान का हिरोशिमा नगर रोज़मर्रा के कामों में लगा था। सुबह का वक्त था। ज़्यादातर घरों में शायद नाश्ते की तैयारी चल रही होगी। तभी हवाई हमले का सायरन बज उठा। यह दुश्मनों के हवाई जहाज़ आने की चेतावनी थी। दूसरे महायुद्ध का समय था इसलिए ऐसे सायरन लगभग रोज़ ही बजते रहते थे। लोगों को इसकी आदत-सी हो गई थी। वे एक नज़र आसमान पर डालते और फिर अपने-अपने कामों में लग जाते। कुछ देर बाद सायरन बन्द हो गया।

उस दिन काफी ऊँचाई पर एक अमरीकी जहाज़ मण्डरा रहा था। आमतौर पर ऐसे जहाज़ मौसम की जानकारी इकट्ठा करने वाले होते हैं। यह जहाज़ भी वही कर रहा था। कुछ देर बाद तीन और हवाई जहाज़ आए। शायद पहले वाले जहाज़ ने इन्हें मौसम की जानकारी दी थी। पूरे जापान पर बादल छाए हुए थे। केवल हिरोशिमा के ऊपर आसमान साफ था। कोई सवा आठ बजे एक हवाई जहाज़ ने हिरोशिमा के ऊपर कुछ नीची उड़ान भरी। और "लिटिल बॉय" नाम का एक एटम बम गिराकर फौरन रफ्तार पकड़ ली। 43 सैकेण्ड बाद ज़मीन से 1850 फुट की ऊँचाई पर वह फट गया। इससे ऐसी रौशनी हुई जैसे एक साथ हज़ारों सूरज उग आए हों। थोड़ी ही देर बाद धुएँ और आग का बादल 40 हज़ार फुट तक ऊपर उठ आया। हिरोशिमा का लगभग 10 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र मानो पिघलकर गायब हो गया।

एक जीता-जागता शहर नष्ट हो चुका था। एक मील क्षेत्र की लगभग सारी इमारतें धराशाई हो गईं। जगह-जगह आग लग गई। इतने में तेज़ हवाएँ चलने लगीं। जो कुछ बचा था वह इस बड़ी आग में धू-धूकर जल उठा। लगभग ७0 हज़ार लोग उसी वक्त मारे गए और लगभग इतने ही लोग बाद के सालों में मारे गए – जलने से या एटम बम से पैदा हुए जानलेवा रोगों से।

विनाश का यह खेल यहीं खत्म नहीं हुआ। 3 दिन बाद 9 अगस्त को वैसे ही जहाज़ जापान के आसमान पर एक बार फिर मण्डराए। और सुबह 11 बजे नागासाकी शहर पर "फैट मैन" नाम का एटम बम गिरा गए। लगभग ७0-80 हज़ार लोग इस बम का शिकार बने। एक जापानी रिपोर्ट में छपा – "नागासाकी कब्रिस्तान की तरह उजड़ा-सपाट हो गया है। एक ऐसा कब्रिस्तान जिसमें एक भी कब्र का पत्थर खड़ा नहीं दिखाई देता है।" लगभग 40 हज़ार लोग तो कुछेक दिनों में खत्म हो गए और लगभग उतने ही लोग आने वाले सालों में बीमारी से मारे गए।

आज के बमों के आगे हिरोशिमा का बम बच्चा-बम कहा जा सकता है। आज के बमों को अपना निशाना खोजने से न बादल, न पानी या खराब मौसम रोक सकते हैं। इन्हें दूर बैठे-बैठे ही मिसाइलों से छोड़ा जा सकता है।

क्या हम इन विनाशक हथियारों पर गर्व कर सकते हैं?

युद्ध को एक आम ज़िन्दगी ने कैसे सहा इसकी झलक एक जापानी यौची यामागाटा की कलम से...

6 और 9 अगस्त 1945

नारिको तब 18 साल की थी। वह सिओल मे रहती थी। सिओल उस वक्त कोरिया की राजधानी था। पिछले 35 सालों से कोरिया जापान के कब्ज़ा में था।

कुछ समय पहले ही नारिको की शादी केंज़ो से हुई थी। केंज़ो सियोल विश्वविद्यालय में डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहा था। केंज़ो का साथ पाकर वह बहुत खुश थी। दोनों नए जीवन की खुशियाँ और चिन्ताएँ आपस में बाँटा करते थे। शादी के बाद भी नारिको अपने माता-पिता के घर में ही रही। वह पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। उसकी माँ बीमार थी। इसलिए पूरे परिवार का राशन लाने के लिए उसे ही लाइन में खड़ा होना पड़ता था। यह बात है दूसरे विश्व युद्ध की। जापान एक दुस्साहसी युद्ध लड़ रहा था। और उसकी आर्थिक स्थिति काफी खस्ता हो चुकी थी।

15 अगस्त 1945 के दिन नारिको की दो छोटी बहनें रोती-रोती घर आईं। उन्होंने बताया कि जापान युद्ध हार ारी नहीं दी गई थी। वह तो बाद में पता गया है। और इसलिए उन्हें रेल में बैठने से मना कर दिया गया है। घर पर सभी को उनकी बातों पर यकीन नहीं हुआ। स्कूल के टीचर, मिलेट्री के लोग तो बार-बार यकीन दिला रहे थे कि जापान डटा हुआ है और वह कभी हार नहीं सकता। हालाँकि कुछ इशारे ज़रूर मिल रहे थे कि यह लड़ाई जीतना आसान नहीं होगा। रेडियो में खबरें आ रही थीं कि हिरोशिमा और नागासाकी पर "एक नए तरह" के बम से हमला हुआ है। इससे आगे की कुछ भी जानकारी नहीं दी गई थी। वह तो बाद में पता चला कि वो नया बम परमाणु बम था। बमों से हुए विनाश और इसके बाद बनी परिस्थितियों को देखते हुए जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया। और इसी के साथ 1939 से चला आ रहा दूसरा विश्व युद्ध खत्म हो गया है।

15 अगस्त की शाम को नारिको के पिता ने कहा कि अ कोरिया छोड़ना होगा। नारिको की माँ ने बच्चों को गोद उठाने वाली थैलियाँ बनाईं और पिता ने पानी की बोतलें। उन्होंने कुछ चीज़ें चुनीं जिन्हें साथ ले जाया जा सकता था। नारिको के सबसे पसन्दीदा किमोनो (जापानी पारम्परिक वस्त्र) से उसके एक भाई के लिए बिस्तर बनाया गया।

कोरिया अब आज़ाद हो चुका था। इसलिए वहाँ जापान के उगते सूरज वाले झण्डे की जगह कोरिया का यिन-यांग वाला झण्डा फहराने लगा था। कहीं-कहीं खुशी से नाचते-न लगाते कोरियावासी दिख जाते – "कोरिया अमर र खुशकिस्मती से सियोल में ज़्यादा दंगे-फसाद नहीं हुए। हालांक उत्तरी कोरिया में तनाव कुछ ज़्यादा था। कई जापानी नागरिक दक्षिण कोरिया पहुँच ही नहीं पाए। दक्षिण कोरिया से ही उन्हें जापान ले जाया जाना था। लेकिन यहाँ पहुँचने से पहले उन्हें या तो मार दिया गया या बीमारी-भूख से वे खुद मारे गए। कई लोगों ने तो एक साथ आत्महत्या कर ली। लेकिन बावजूद इसके कोरियाई छात्र अपने जापानी शिक्षकों को पहले जैसी इज़्ज़त देते रहे।

कोरिया से जापानियों को निकालने का काम शुरू हुआ। सबसे पहले आर्मी और रेड-क्रॉस वालों को निकाला गया। आम नागरिकों को बिना किसी खास सुरक्षा के पीछे छोड़ दिया गया था। लोगों को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए मेडिकल कॉलेज के लोगों ने मदद की। केंज़ो भी इस टीम का हिस्सा था। वह सियोल और पूसान के बीच लगातार आना-जाना करता रहा। पूसान कोरिया का बन्दरगाह था। यह जगह जापान के सबसे करीब थी। केंज़ो जापान से कोरिया और कोरिया से जापान आने-जाने वाले सभी यात्रियों को चिकित्सीय सुविधाएँ उपलब्ध कराता रहा। उसकी डॉक्टरी की पढ़ाई काम आ रही थी।

नारिको को बच्चा होने वाला था। इसलिए पूसान तक वह रेल के साधारण डिब्बे में पहुँची। बाकी के लोगों को मालगाड़ी के डिब्बों में ठूँस दिया जाता था। पूसान में नारिको केंज़ो से मिली। बन्दरगाह में एक अमरीकी सैनिक को पता चला कि उनकी शादी हुए अभी ज़्यादा दिन नहीं हुए हैं। उस सैनिक ने उन्हें एक-दूसरे को चूमने के लिए कहा। दोनों ने इसे मानने से इंकार कर दिया। उन दिनों सार्वजनिक रूप से चूमना जापानी रिवाज़ के विरुद्ध माना जाता था।

बम लिटिल बॉय

नाव लोगों को लेकर पूसान से चली और जापान के हकाटा बन्दरगाह पर पहुँची। नारिको इससे पहले दो-एक बार ही जापान आई थी। हर बार कुछ दिनों के लिए। लेकिन इस बार यह एक-तरफा सफर होना था। अब नारिको को कोरिया छोड़ हमेशा के लिए जापान में बस जाना था।

उत्तरी कोरिया

सियोल

दक्षिण कोरिया

पूसान

जापान में नारिको के रिश्तेदारों ने उनका स्वागत किया। लेकिन फिर भी उन्हें कई जगह बदलने के बाद ही अपना ठिकाना मिला। वे ओसाका के बाहरी इलाके में रहे। जल्द ही केंज़ो भी आ गया।

कुछ महीनों बाद उनके घर एक बेटा पैदा हुआ। दाई के समय पर नहीं पहुँच पाने के कारण केंज़ो ने अपनी पत्नी का प्रसव कराया। उसकी डॉक्टरी की पढ़ाई फिर काम आई थी।

नागासाकी के दो युद्ध पीड़ित

नारिको का दूध बच्चे को कम पड़ता था इसलिए नारिको के पिता एक बकरी ले आए थे। उन दिनों गरीबी के कारण कई माँएँ-बच्चे अपनी जान से हाथ धो बैठते थे। वह छोटा-सा बच्चा तो बच गया पर उसके एक मामा की 13 साल की उम्र में निमोनिया होने से मौत हो गई थी।

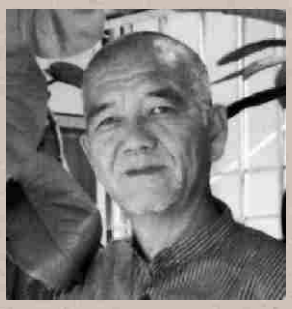

नारिको और केंज़ो ने अपने बच्चे का नाम रखा – योची यानी सागर। वह बड़ा हुआ इस सपने के साथ कि एक दिन वह उस सागर को ज़रूर पार करेगा जिसे उसके माँ-पिता को उनकी मर्ज़ी के खिलाफ पार करना पड़ा था। योची अपनी नई ज़िन्दगी उसी जगह से शुरू करना चाहता था जहाँ उसे पैदा होना चाहिए था लेकिन युद्ध ने ऐसा होने नहीं दिया...। चक मक

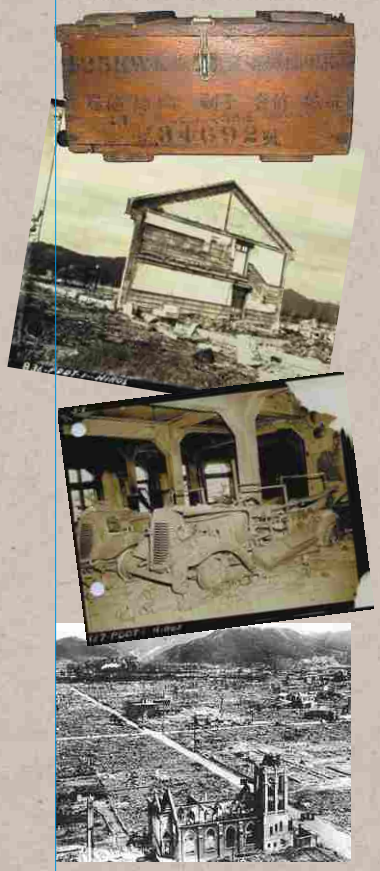

उस बक्से में...

कोई 8-9 साल पहले मैसाचुसेट्स (इंग्लैण्ड) में एक आदमी अपने कुत्ते को घुमाने निकला। रात का समय था और बरसात हो रही थी। तभी पड़ोसी के घर के आगे उसे बेकार सामान का ढेर दिखा – पुराने गद्दे, गत्ते के डिब्बे, टूटे लैम्प वगैरह। अचानक उनकी नज़र इस ढेर में पड़े एक टूटे-फूटे बक्से पर पड़ी। उसने झुककर बक्सा सीधा किया और खोल दिया। बक्सा काले-सफेद फोटो से भरा हुआ था। ध्वस्त इमारतें, मुड़े-तुड़े लोहे के ढाँचे, टूटे पुल – एक उजड़े शहर की तस्वीरें। वह बक्सा समेट कर तुरन्त घर ले आया। घर पर आकर जो उसने गौर से देखा तो उसका शक सही निकला – वह उजड़े हिरोशिमा को ही देख रहा था।

जापान पर बम गिराने के बाद अमरीकी सरकार को फिक्र होने लगी कि कहीं उजड़े शहरों की तस्वीरें देखकर जापान में दुख और गुस्से की आग न भड़क जाए। इसलिए उसने फरमान जारी कर दिया कि कुछ भी ऐसा न छापा जाए जिससे लोगों की शान्ति भंग हो। चक मक

(16 जुलाई 2005 में द गार्डियन अखबार में छपे एडम लेवी के लेख का एक अंश)

कभी पास-कभी दूर

– माधव केलकर

चकमक के अगस्त माह के अंक में एक लेख छपा था "सूरज की लुकाछिपी"। इस लेख में पृथ्वी को सूरज के पास और दूर दिखाने वाले चित्र में एक-दो गलतियाँ रह गई थीं।

1. पृथ्वी का परिक्रमा पथ काफी चपटा बना दिया गया था जबकि यह पथ लगभग वृत्ताकार है।

2. पृथ्वी सूरज का चक्कर लगाते हुए 3 जनवरी को सबसे पास के बिन्दु पर होती है और 4 जुलाई को सबसे दूर के बिन्दु पर। यानी लगभग 6 महीने बाद पास वाले बिन्दु से दूर वाले बिन्दु पर पहुँचती है। दूसरे शब्दों में, ये दोनों बिन्दु एक-दूसरे से 180 डिग्री की दूरी पर स्थित हैं। हालाँकि ऐसे थ्री डायमेनशनल चित्रों को पूरी बारीकियों के साथ दिखाना कठिन होता है। परिक्रमा पथ को चपटा बनाने से लगता है कि पृथ्वी दो बार दूर के बिन्दुओं पर और दो बार पास के बिन्दुओं पर है। बेहतर यही होगा कि परिक्रमा पथ को वृत्ताकार रखते हुए सूर्य को वृत्त के एकदम केन्द्र में न रखते हुए थोड़ा खिसकाकर दिखाया जाए तब भी पर्याप्त होगा।

मेरे विचार से चित्र कुछ इस तरह होना चाहिए थाः

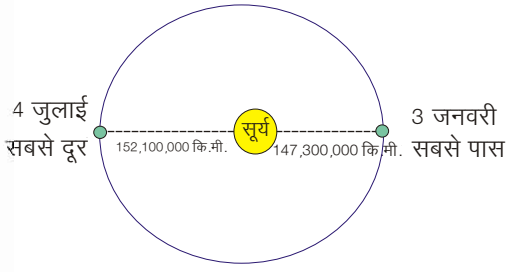

✸हमें इस भूल का खेद है - सम्पादक